ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-4* May- 2019
Innovation The Research Concept

# शोध पत्र कैसे लिखें

**अन्जू**
सहयुक्त आचार्य
समाजशास्त्र विभाग
दी0 द0 उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर

**सारांश**

मानव केवल एक जिज्ञासु प्राणी ही नही है बल्कि एक खोज मूलक प्राणी भी है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने चारों ओर विद्यमान सभी प्रकार की घटनाओं का कारण जानने का प्रयत्न करता है तथा उन नियमों को ढूढने में व्यस्त रहता है जो हमारी सभी प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों का वास्तविक आधार है। मानव की जिज्ञासा का आधार चाहे प्राकृतिक दशाएँ हो अथवा समाजिक जटिलताएँ, इनसे सम्बन्धित ज्ञान का स्पष्टीकरण करना तथा प्राप्त ज्ञान का सत्यापन करना ही शोध है।

आज जिन आधारों पर सामाजिक शोध को विकसित किया जा रहा है उनमें अवलोकन और सत्यापन पर आधारित अनुभव सिद्ध ज्ञान का महत्व अधिक है। सामाजिक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम सर्वप्रथम किसी समस्या, व्यवहार अथवा घटना से सम्बन्धित आधारभूत तथ्यों का अवलोकन करके उसकी सामान्य प्रकृति को समझने का प्रयत्न करते है ओर तत्पश्चात् उन सामान्य कारणों अथवा नियमों को ढूढ़ने का प्रयास करते है, जो एक विशेष घटना से सम्बन्धित कार्य – कारण के सम्बन्ध को स्पष्ट कर सकें। दूसरे शब्दों में सामाजिक शोध एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा किसी विशेष लक्ष्य को सामने रखकर नये सिद्धान्त का निर्माण किया जाता है। इस दृष्टिकोण से विभिन्न विद्वानों ने समााजिक शोध को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है–

फिशर ने लिखा है – किसी समस्या को हल करने अथवा एक परिकल्पना की परीक्षा करने अथवा नयी घटना या नये सम्बन्धों को खोजने के उद्देश्य से सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त कार्य–विधि का प्रयोग करना ही सामाजिक शोध है।

श्रीमती पी0वी0 यंग – सामाजिक शोध को एक ऐसे वैज्ञानिक प्रयत्न के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका उद्देश्य तार्किक और क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नये तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की परीक्षा और सत्यापन उनके क्रमों पारस्परिक सम्बन्धों

कार्य कारण की व्याख्या तथा उन्हें संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।

परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि शोध का तात्पर्य केवल नये सिद्धान्तों का निर्माण करना ही नहीं होता बल्कि जब कभी भी पुराने तथ्यों की प्रामाणिकता को जानने का प्रयत्न किया जाता है तो ऐसे सभी प्रयत्नों की व्यवस्थित प्रणाली को ही हम शोध के नाम से सम्बोधित करते हैं। वैज्ञानिक शोध की वास्तविक प्रकृति को इसकी विशेषताओं की सहायता से समझा जा सकता है –

1. वैज्ञानिक पद्धतियों के उपयोग द्वारा विभिन्न घटनाओं तथा मानव व्यवहारों का सूक्ष्म स्व अध्ययन ही शोध करना है।
2. सामाजिक घटनाओं तथा समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन ही नही बल्कि इसका उद्देश्य नवीन ज्ञान का सृजन करना भी होता है।
3. शोध के अन्तर्गत नये तथ्यों की खोज करने के साथ ही पुराने तथ्यों अथवा सिद्धान्तों की पुर्नपरीक्षा और सत्यापन का कार्य भी करना है।
4. शोध एक ऐसी पद्धति है जिसका कार्य किसी परिकल्पना की उपयुक्तता की जॉच करना है।
5. शोध एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
6. शोध पद्धतियों प्रविधियों तथा उपकरणों के प्रयोग तक सीमित नही है बल्कि इसका सम्बन्ध नई प्रविधियों के विकास से है।

## अनुसंधान की सामान्य विशेषतायें–

अनुसंधान की सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. नवीन ज्ञान की वृद्धि एवं विकास
2. सामान्य नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन
3. वैज्ञानिक, सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित प्रक्रिया
4. विश्वसनीयता
5. वैधता
6. वस्तुनिष्ठता
7. तार्किकता
8. परिकल्पनाओं की पुष्टि
9. गुणात्मक एवं परिमाणात्मक
10. प्रदत्तों की व्यवस्था
11. सुनिश्चित विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग

12. वैज्ञानिक (ढंग से) रिपोटिंग
13. सामान्यीकरण

हिटनी के शब्दों में – कह सकते है कि अनुसंधान का लक्ष्य विभिन्न समस्याओं का समाधान करके उनमें योगदान करना है जिसमें वैज्ञानिक विधि, दार्शनिक विधि तथा चिन्तन का प्रयोग किया जाता ह।

## अनुसंधान के उद्देश्य

अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

**1. सैद्धान्तिक उद्देश्य** – अनुसंधान के अन्तर्गत वैज्ञानिक विधि के माध्यम से नवीन सिद्धान्तों एवं नियमों का प्रतिपादन किया जाता है, ये शोध कार्य व्याख्यात्मक प्रकृति के होते हैं इनके अन्तर्गत चरों के मध्य सहसम्बंधों की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के शोध कार्यों से प्राथमिक रूप में ज्ञान को वृद्धि होती है।

**2. तथ्यात्मक उद्देश्य** – ऐतिहासिक अनुसंधानों के द्वारा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है इनके आधार पर वर्तमान घटनाओं को समझने में सुविधा मिलती है, इन उद्देश्यों की प्रकृति वर्णनात्मक होती है। क्योंकि तथ्यों की खोज करके उनका अथवा घटनाओं का वर्णन किया जाता है।

**3. सत्यात्मक उद्देश्य**– अनुसंधानों के द्वारा नवीन सत्यों की स्थापना की जाती है।

**4. व्यावहारिक उद्देश्य**– किसी भी अनुसंधान के निष्कर्षों का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिये, परन्तु अनेक ऐसे अनुसंधान भी होते है जहॉ पर केवल उपयोगिता को ही महत्व प्रदान किया जाता है।

## अनुसंधानों का वर्गीकरण–

अनुसंधानों को विभिन्न आधार पर विद्वानों ने विभिन्न– ढंग से वर्गीकृत किया है इनके प्रमुख वर्गीकरण के मानदण्ड निम्नलिखित है–

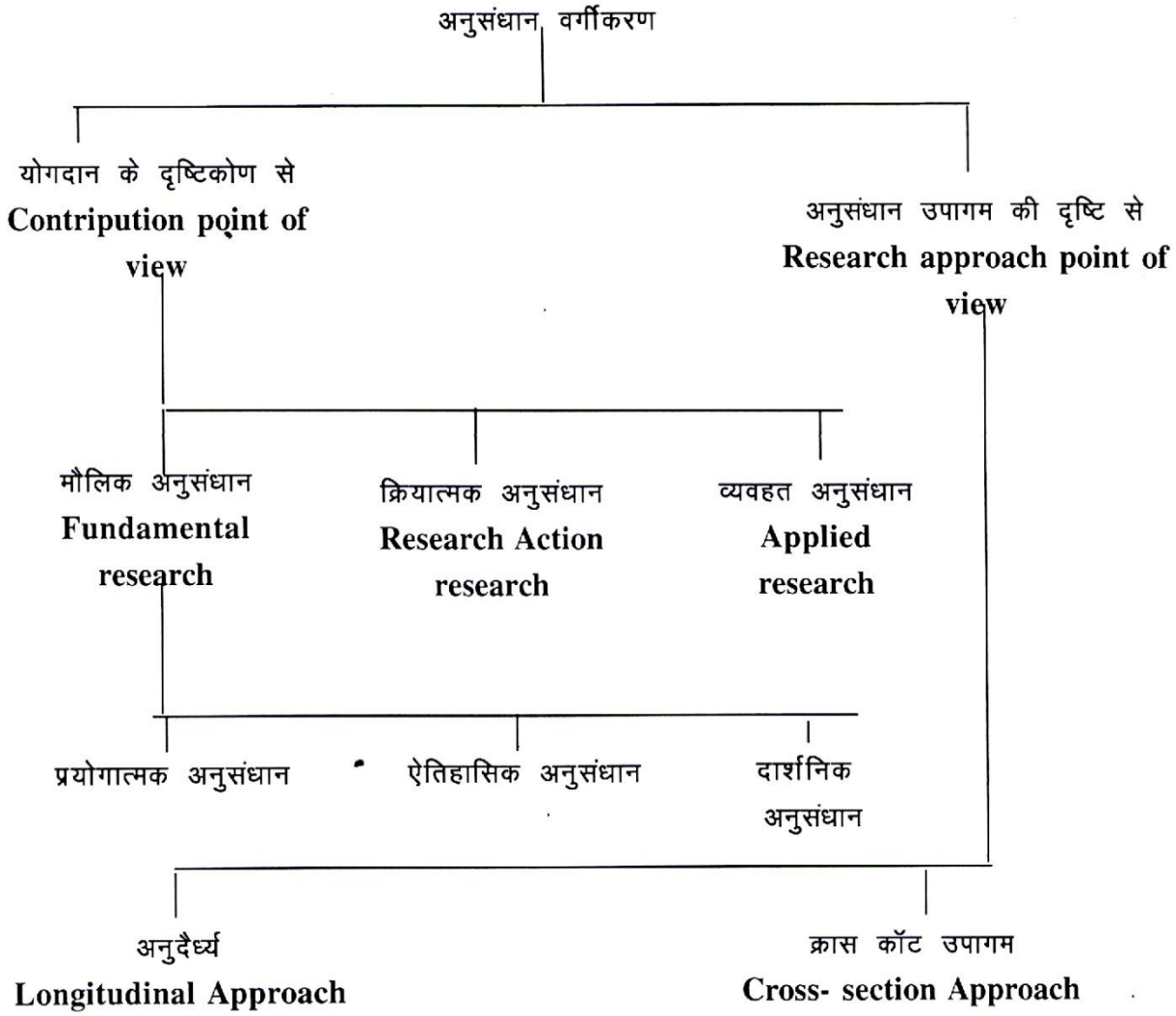


1. **मौलिक अनुसंधान (Fundamental Research)**– इन अनुसंधानों के द्वारा नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है– नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन तथा नवीन तथ्यों की खोंज की जाती है।

अ– प्रयोगात्मक अनुसंधान(Experiemental Research)– इस प्रकार के अनुसंधानों के द्वारा नवीन सिद्धान्तों एवं नियमों का प्रतिपादन किया जाता है।

ब– ऐतिहासिक अनुसंधान(Historical Research)– इन अनुसंधानों के द्वारा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है जिनमें अतीत का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अनुसंधान से अतीत के आधार पर वर्तमान समय में घटित होने वाली घटनाओं को समझने का प्रयास किया जाता है।

स– दार्शनिक अनुसंधान (Philosophical Research)– इन अनुसंधानों के द्वारा नवीन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की स्थापना की जाती है। सभी सैद्धान्तिक अनुसंधान दार्शनिकक अनुसंधानों के द्वारा ही विकसित किये जाते हैं।

2. **व्यवहृत अनुसंधान** (Applied Research)– ऐसे सभी अनुसंधान जिनसे व्यावहारिक उपयोग के माध्यमों की खोज की जाती है अथवा मौलिक अनुसंधानों को व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करने के प्रयास किये जाते हैं उन्हें व्यवहत अनुसंधान।

1. **मौलिक अनुसंधान (Fundamental Research)**– इन अनुसंधानों के द्वारा नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है– नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन तथा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है।

**अ– प्रयोगात्मक अनुसंधान** (Experiemental Research)– इस प्रकार के अनुसंधानों के द्वारा नवीन सिद्धान्तों एवं नियमों का प्रतिपादन किया जाता है।

**ब– ऐतिहासिक अनुसंधान** (Historical Research)– इन अनुसंधानों के द्वारा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है जिनमें अतीत का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अनुसंधान से अतीत के आधार पर वर्तमान समय में घटित होने वाली घटनाओं को समझने का प्रयास किया जाता है।

**स– दार्शनिक अनुसंधान** ( Philosophical Research)– इन अनुसंधानों के द्वारा नवीन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की स्थापना की जाती है। सभी सैद्धान्तिक अनुसंधान दार्शनिकक अनुसंधानों के द्वारा ही विकसित किये जाते हैं।

2. **व्यवहृत अनुसंधान** (Applied Research)– ऐसे सभी अनुसंधान जिनसे व्यावहारिक उपयोग के माध्यमों की खोज की जाती है अथवा मौलिक अनुसंधानों को व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करने के प्रयास किये जाते हैं उन्हें व्यवहत अनुसंधान।

3. **क्रियात्मक अनुसंधान**– ये एक प्रकार के तात्कालिक अनुसंधान होते है जो एक निश्चित समाज में किसी तथ्य की खोज करते है या प्रत्यक्ष समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

## अनुसंधान के स्तर–

अनुसंधान की व्यवस्था चार स्तरों पर की जाती है–

1. प्रदत्तों का संकलन– (Data Collection )
2. अनुसंधान का द्वितीय स्तर आन्तरिक वैधता (Internal Validity)
3. बाह्म वैधता (External Validity )
4. सैद्धान्तिक अनुसंधान (Theosilical Research)

## अनुसंधान पत्र की लेखन प्रकिया के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित है –

1. **विषय क्षेत्र या विषय का चुनाव**– प्रथम किसी एक विषय का चुनाव कर लिया जाता है जिसका कि अध्ययन करना है जिस विषय का हम चुनाव कर रहे है उसके सम्बन्ध में वैज्ञानिक विधियों की सहायता से अध्ययन करना संभव है या नहीं, साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि जिस विषय को अध्ययन के लिये चुना गया है उसका क्षेत्र कहीं इतना अधिक विस्तृत न हो कि उसके सम्बन्ध में अध्ययन करना ही आगे चलकर

असंभव प्रतीत हो। ऑगर्बन ने लिखा है कि शोध कार्य के लिये ऐसा विषय कदापि नही चुनना चाहिए जिसके सम्बन्ध में प्रमाणसिद्व तथ्य उपलब्ध नही हो और जो कि पद्धति शास्त्र के दृष्टिकोण से अत्यधिक कठिन हो।

**2. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**– विषय का चुनाव करने के पश्चात हम उस विषय से सम्बद्ध अन्य शोध पुस्तकों का अध्ययन करें और अपने को अन्य शोधकर्ताओं के विचारों निष्कर्षों तथा पद्धतियों से परिचित कर करें।

**3. ईकाईयों का निर्धारण तथा स्पष्टीकरण**– शोधकर्ता को अपने अध्ययन–कार्य में अत्यधिक कठिनाई इस कारण होती है कि आरम्भ में ही इकाईयों का स्पष्टीकरण नही किया गया है। समस्त इकाईयों का अर्थ स्पष्ट हो जाने का तात्पर्य अध्ययन का लक्ष्य व क्षेत्र का भी स्पष्टीकरण है।

**4. अनुसंधान की परिकल्पना**– शोध विषय के सम्बन्ध में प्रामिक ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात शेाधकर्ता अपने विचार से एक ऐसा सिद्धान्त या निष्कर्ष बना लेता है जिसके सम्बन्ध में वह यह कल्पना करता है कि वह सिद्धान्त सम्भवतः उसके अध्ययन का आधार सिद्धान्त सम्भवतः उसके अध्ययन का आधार सिद्ध हो सकता है पर उस निष्कर्ष या सिद्धान्त को ही वह सच नही मान लेता है, जब तक कि उसका पुष्टीकरण वास्तविक तथ्यों द्वारा न हो जाये।

**5. सूचना के स्रोत**– प्राकल्पना का निर्माण कर लेने के पश्चात् सूचना के स्रोत तथा अध्ययन के लिये उपयोगी पद्धतियों का निर्धारण आवश्यक होता है। प्राकल्पना सच है अथवा नही इसके लिये तथ्यों का संकलन आवश्यक है। यह तथ्य स्वयं बोलते है कि क्या ठीक है और क्या गलत है।

**6. तथ्यों का निरीक्षण व संकलन**– प्रविधियों का चुनाव हो जाने के पश्चात वास्तविक शोध कार्य उस समय आरम्भ होता है जब कि तथ्यों का निरीक्षण व सकंलन का काम शुरू किया जाता है।

**7. वर्गीकरण करना**– तथ्यों का संकलन कर लेने के पश्चात उनकों शोध कार्य के लिये वास्तव में उपयोगी बनाने के लिये निश्चित क्रमों तथा श्रेणियों में वर्गीकरण करना होता है।

**8. निष्कर्ष**– निष्कर्षीकरण एवं नियमों का प्रतिपादन सामाजिक शोध का अन्तिम चरण है जो कि तथ्यों का वर्गीकरण के पश्चात् संभव है।